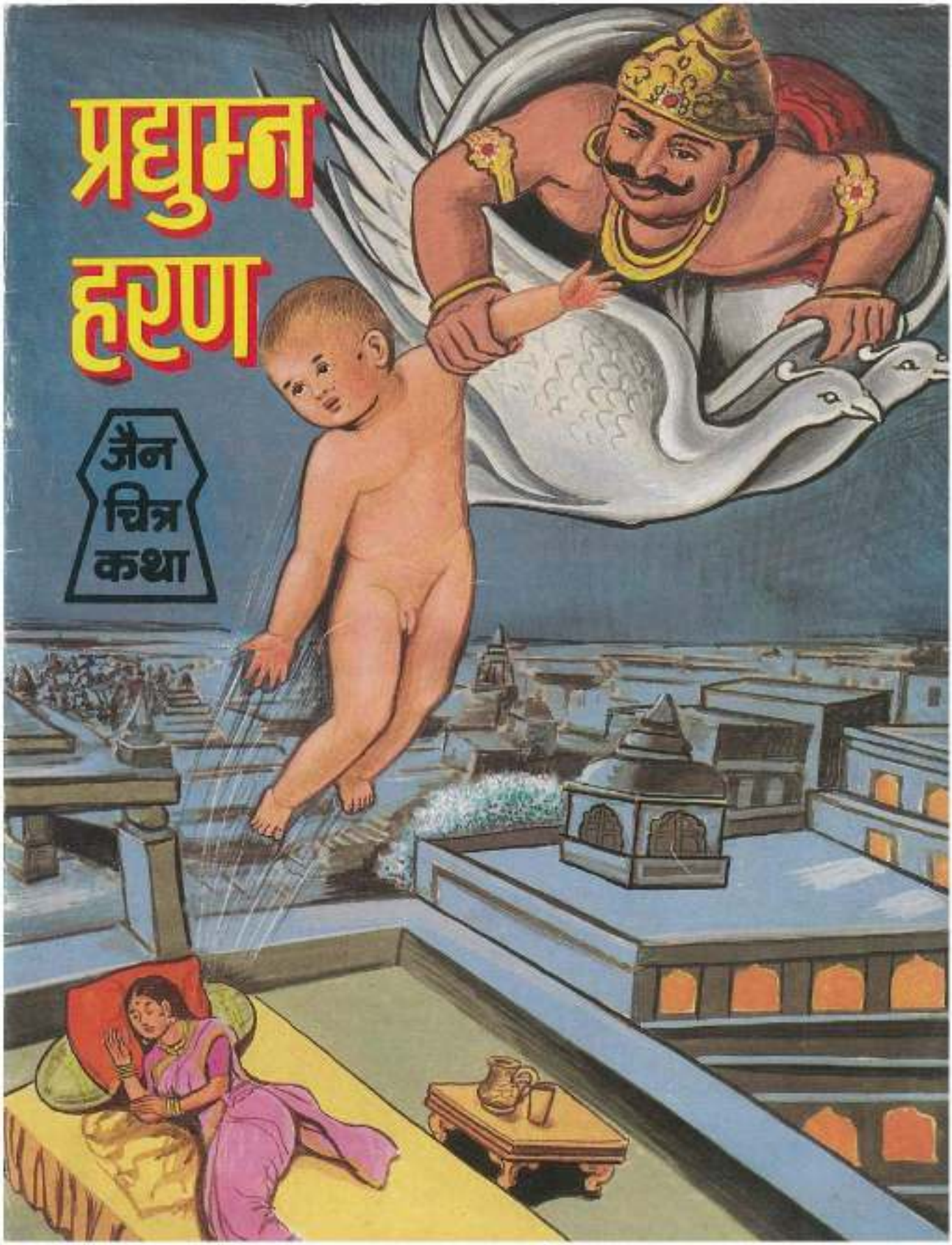

प्रद्युम्न हरण
जैन चित्र कथा

सम्पादकीय

भारतीय जैन संस्कृति का ज्ञान कराने के लिए जैन चित्रकथा अति आवश्यक है। वर्तमान समय में कथा कहानियाँ पढ़ने की रुचि युवा वर्ग में अधिक देखी जा रही है। जीवन को उन्नत बनाने वाली कथाओं के पढ़ने से आत्मोन्नति होती ही है तथा पुन्योपार्जन का कारण भी है, धार्मिक कथाओं के पढ़ने से आत्म शान्ति का अनुभव होता है। भारतीय संस्कृति का ज्ञान कराने के लिए कथा साहित्य अति ही आवश्यक है।

इस कृति में क्रीड़ा कौतकी तथा सतत् विहार करने वाले नारदजी श्री कृष्ण के दरबार में आए तथा कुछ समय ठहर कर चपल स्वभावी नारदजी अन्तपुर सत्यभामा के महल गये, सत्यभामा ने नारदजी का अपमान किया। अहंकार से युक्त नारद जी ने अपमान का बदला लेने की भावना से रुकमणी का पाणिग्रहण संस्कार श्री कृष्ण के साथ करा कर सौत के रूप में बदला लिया। रुकमणी के पुत्र प्रद्युम्न ने नाना प्रकार के कौतुहल कर के मानव समाज का मनोरंजन कर प्रायश्चित करने के हेतु धर्म साधना में तल्लीन होकर अपनी आत्मा का उद्धार कर गये।

—धर्मचंद शास्त्री

भरत क्षेत्र के सौराष्ट्र देश में द्वारिका नाम की नगरी थी जिसके राजा श्री कृष्ण थे। एक दिन .....

प्रद्युम्न हरण

चित्रांकन : बनी सेठ





नारदजी द्वारका में शीघ्र ही सत्यभामा के महल में पहुचे। सत्यभामा श्रृंगारादि में मग्न थी. अतः नारदजी का सम्मान नहीं किया

क्या सत्यभामा को इतना घमंड हो गया कि इसने मेरा सम्मान नहीं किया

नारदजी शीघ्र ही महल से बाहर निकल गये सत्यभामा को नारद जी के आने का पता भी नहीं चला।

नारदजी वृन्दावन से वापस आकर कैलाश पर्वत पर पहुचे तथा सत्यभामा के अपमान की योजना बनाने लगे।

हां अच्छा होगा कि मैं सत्यभामा से सुन्दर कन्या का श्री कृष्ण से विवाह करवाऊं जिससे सत्यभामा का अपमान अवश्य होगा।

नारदजी ने बहुत जगह जाकर सुन्दर कन्या की खोज की

एक दिन नारदजी कुण्डनपुर नगर गये जहाँ पर राजा भीष्म की पुत्री रुक्मिणी को देखा

हां इस कन्या से श्री कृष्ण की शादी करवाऊं जिससे मेरा अपमान का बदला लिया जा सकेगा

नारद जी कुंडलपुर से कैलाश पर्वत पर पहुंचे वहां बैठकर उन्होंने रुक्मिणी का सुन्दर चित्र बनाया

हां! यह चित्र बहुत सुन्दर बना श्रीकृष्ण इसे देखकर मोहित अवश्य हो जायेंगे!

कैलाश पर्वत से नारद जी द्वारिकापुरी पहुंचे ....

कहिए मुनिराज! द्वारिकाधीश! देखिए तो, हम आपके लिए कैसा दुर्लभ चित्र लाए हैं!

इतना सुन्दर रूप! मुनिराज यह कोई मानवी है या कोई देवी या अप्सरा?

यह चित्र कुंडलपुर के राजा भीष्मक की परम रूपवती पुत्री रुक्मिणी का है। यह कन्या हर प्रकार से आपके योग्य है, राजन्!

तो क्या, यह बाला कुंआरी है?

है तो कुंआरी ही। किन्तु इसके पिताजी इसकी मंगनी चेदिराज के राजा शिशुपाल के साथ कर दी है।

तब छोड़िए! जब इसका विवाह तय हो ही चुका है तब इस प्रसंग से क्या लाभ

ऐसी बात नहीं, कृष्ण! वास्तव में, यह कन्या शिशुपाल से विवाह नहीं करना चाहती!

क्यों??

एक बार हमने आपकी चर्चा इससे की थी, अब तभी से यह मन-प्राण से आपका वरण कर चुकी है।

तब क्या किया जाए?


रुक्मिणी का हरण। अंतिम शिशुपाल से युद्ध किए बिना यह समस्या न हो सकेगा।
वह देखना आसान। आप तो यह बताइए कि रुक्मिणी के घर कब और कहां पहुंचा जाए।
कुंडलपुर में एक सुन्दर उपवन है। पद्मावन। रुक्मिणी ने वहां अशोक वृक्ष के नीचे कामदेव की मूर्ति स्थापित की है। आज से तीसरे पखवे दिन वह आपको वहीं मिलेगी उसी दिन उसका विवाह होगा है।
ठीक है। मैं पहले दिन प्रातः ही पद्मवन में पहुंच जाऊंगा।
अच्छा जी अब चलूं। बंदेरी के भी रंग-ढंग देखूं।
जैसी आपकी इच्छा।
नारद जी द्वारिका में पलक झपकते अब.... और शिशुपाल के महल में पहुंचे।
अरहंत। अरहंत।
पधारिये, मुनिराज। स्वागत है। कृपया आसन ग्रहण करें।
शिशुपाल ने नारद जी को सम्मान पूर्वक आसन दिया।
सुना है तुम्हारा विवाह कुंडलपुर की राजकुमारी रुक्मिणी के साथ हो रहा है।
आपने सच ही सुना है, मुनिवर। कोई विशेष बात।
हां है। तुम अपनी आसन्न विपदा तो पहिचानो।
आओ लीजिए, मुनिराज।
शिशुपाल ने अपनी अज्ञानता नारद जी को दिखाई।

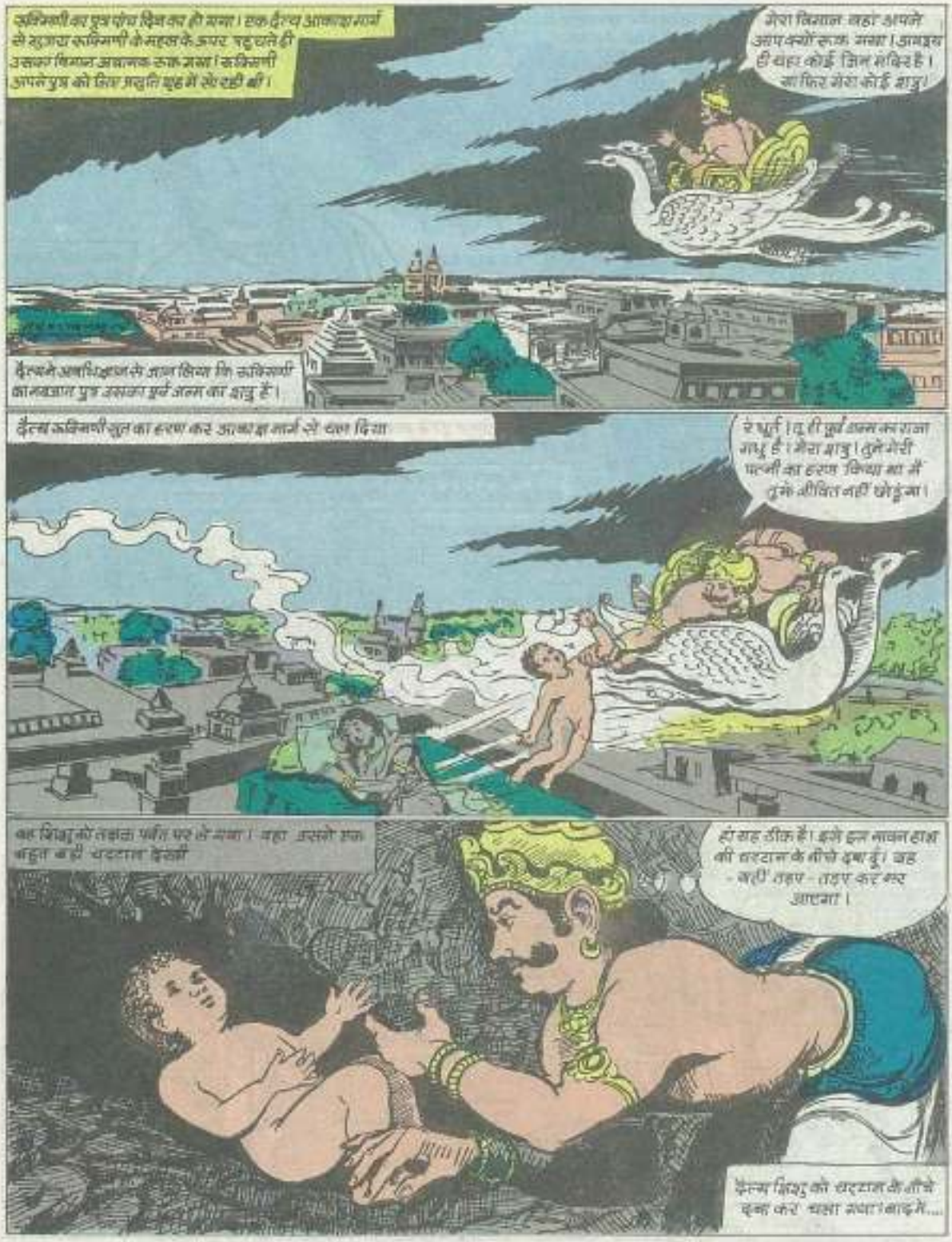

राजन्, परिक्षा में तुम्हारे लग्न में विघ्न के स्पष्ट संकेत है, तुम्हारे शरीर को भी कष्ट पहुंच सकता है। इसलिए तुम्हें कुंडनपुर लेना लेकर आना चाहिए।
ठीक है। ऐसा ही करूंगा। और कोई आदेश।
मैंने तुम्हें सचेत कर दिया। आगे तुम्हारी इच्छा। अब चलता हूं नारायण! अरहंत!!
अरहंत सुविसद।
नारदजी भीष्मों के कुंडनपुर चले गये। वहां उन्होंने और उनकी बुआ को समझाकर भुजावर लोकाचार - शगुन के लिए भिजवा दिया।
कुंडनपुर में पांचवें दिन प्रातः ही शिशुपाल के सैनिकों ने नगर में जगह - जगह डेरा डाल दिया।
भुजावरी, नारदजी कह तो गये हैं। किन्तु श्री कृष्ण नहीं आए तो?
ऐसा नहीं हो सकता। श्री कृष्ण यहां लग में अवश्य पहुंचेंगे। तू चल चलने की तैयारी कर।
सुना है नगर में जब लग शिशुपाल के सैनिक तैनात है। अगर उन्होंने हमें वहां नहीं जाने दिया, तो?
तू इस बात की चिंता मत कर। मैं तेरे साथ चलूंगी। देखती हूं, तुझे यहां लाने से कौन रोकता है?


रुक्मिणी और उसकी सखा दासियों के साथ गीत गाती हुई पद्मावन की ओर चली; मार्ग में शिशुपाल के सैनिकों ने उन्हें रोका।
अरे तुम सब कहां जा रही हो ?
नहीं पद्मावन में। रुक्मिणी ने एक मनौती मानी रखी थी। जिस दिन इसका विवाह होगा वह उपवन में जाकर देवी की पूजा करेगी। इसलिए वह उपवन में जा रही है।
ठीक है, जाओ। पर जल्दी लौटना।
शिशुपाल के सैनिकों ने रुक्मिणी को उपवन में जाने की अनुमति दे दी।
पद्मावन के समीप पहुंचने पर.....
मेरी, अब तू अकेली ही जा। तेरी मनोकामना पूरी हो।
जैसी आपकी आज्ञा
एकांत में श्रीकृष्ण को न पाकर रुक्मिणी दुखी हो उठी। श्रीकृष्ण कामदेव की मूर्ति के पीछे छिपे हुए थे
हे कृष्ण, हे मुरारी मेरी पुकार सुनो और दर्शन दो।
मैं उपस्थित हूं, देवी चिंता त्यागें। कुछ ही दूरी पर रथ खड़ा है। वहां मेरे बड़े भाई बलराम भी हैं। तुम रथ पर बैठो। द्वारिकापुरी तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है।
रुक्मिणी को दुखी देख श्रीकृष्ण तुरन्त प्रगट


रुक्मिणी सहित श्रीकृष्ण और बलदेव रथ में बैठकर आकाशमार्ग में पहुंचे, श्रीकृष्ण ने शंखनाद कर घोषणा की.....
हे राजा-गणों, सेना पतियों, सुनो ! मेरा नाम कृष्ण है। मैंने बलपूर्वक रुक्मिणी का हरण किया है। जिसमें शक्ति हो छुड़ालें।
अवसर युद्ध हुआ, श्रीकृष्ण की विजय हुई, वह रुक्मिणी के साथ विधिपूर्वक विवाह कर द्वारिका पहुंच गए।
रुक्मिणी के द्वारिका आगमन के कुछ दिन बाद जो ही महारानी सत्यभामा कुछ खिन्न रहने लगी थी तब एक दिन उनकी दासी ने उनसे पूछा.....
महारानीजी, आजकल आप इतनी उदास क्यों रहती हैं ?
क्या बताऊं, दासी ! जब से रुक्मिणी आई है, महाराज इधर आना ही भूल गए हैं। रुक्मिणी के कहने पर ही अवश्य ऐसा किया होगा। यही सोचकर मैं दुखी हूं।


एक दिन श्रीकृष्ण की सभा में कुरुदेश के राजा दुर्योधन का दूत आया।
महाराजाधिराज द्वारिकाधीश की जय। महाराज हमारे स्वामी ने आपकी सेवा में एक प्रस्ताव भेजा है। यदि आपके पुत्र हों और उनके पुत्री अथवा आपके पुत्री और उनके पुत्र ..ये दोनों का विवाह कर देंगे, इस संबंध में उन्होंने आपकी सहमति चाही है, श्रीमान!
हे दूत! राजा दुर्योधन से पहले हमारा कुशल क्षेम कहना। फिर कहना कि हमें उनका प्रस्ताव स्वीकार है।
सत्यभामा को इस प्रस्ताव की जानकारी मिली, वह मन ही मन शंकित हो उठी। वह सोचने लगी.....
यदि रुक्मिणी के पहले पुत्र हो गया, तब तो मेरी और भी अधिक उपेक्षा होगी।
उन्होंने दूती को बुलाया और रुक्मिणी के पास संदेश भेजा.....
दूती रुक्मिणी के पास पहुंची।
हे माता, महारानी सत्यभामा की आज्ञा से एक शिकेदूत है। यदि आपके पुत्र का विवाह पहले हुआ तो आप उनकी चोटी पर पैर रखेंगी। यदि उनके पुत्र का विवाह पहले हुआ तो वह आपकी चोटी पर पैर रखेंगी।
कोई अच्छी बात तो नहीं, लेकिन यदि उनकी यही इच्छा है तो मुझे आपत्ति नहीं।


कुछ दिन बाद एक रात के पिछले पहर में रुक्मिणी ने छः स्वप्न देखे। अगले दिन उन्होंने श्रीकृष्ण को स्वप्नों के बारे में बताया।
हे प्रभो! मैंने छः स्वप्न देखे... कैसा शुभ होगा
सिंहनि अग्नि
चन्द्रमा
समुद्र और
उगता सूर्य
हे रुक्मिणी! इन स्वप्नों का फल बहुत अच्छा है। निकट भविष्य में ही तुमको अति तेजस्वी पुत्र प्राप्त होगा।
छठे स्वप्न में मैंने स्वयं को विमान में बैठे देखा।
सप्तम स्वप्न में भी इसे ही स्वप्न देखोगे। सात भाँतिन पर दोनों ने एक-एक पुत्र की जन्म क्रिया श्री कृष्ण ने दोनों का जन्मोत्सव उल्लास के साथ मनाया।
रुक्मिणी के नवजात पुत्र के गायब हो जाने का समाचार द्वारिका में सर्वत्र फैल गया। श्रीकृष्ण ने अपने मंत्रियों और सेनापतियों को संबोधित किया।
मंत्रिवर, रुक्मिणी पुत्र का हरण अति लज्जा और शोक की बात है। सभी दिशाओं में सैनिक भेज दीजिए। शीघ्रातिशीघ्र शिशु का पता लगाइए।
जो आज्ञा, महाराज
सैनिक बालक की खोज में सभी दिशाओं में दौड़ पड़े।
कुछ दिन और बीत गए। रुक्मिणी पुत्र का कहीं कोई पता नहीं चला। एक दिन नारदजी श्रीकृष्ण की सभा में आए।
अरहत! अरहंत!! कल्याण हो, द्वारिकाधीश।
पधारिए मुनिराज! मैं तो पल-पल आपकी प्रतीक्षा कर रहा था। रुक्मिणी के नवजात पुत्र का हरण हो गया है। अभी तक पता नहीं चला।


रुक्मिणी का पुत्र पांच दिन का हो गया। एक दैत्य आकाश मार्ग से राजा रुक्मिणी के महल के ऊपर पहुंचते ही उसका विमान अचानक रुक गया। रुक्मिणी अपने पुत्र को लिए सूतिका गृह में सो रही थी।
मेरा विमान यहां आपने आप क्यों रुक गया। अवश्य ही यहां कोई जिन मंदिर है। या फिर मेरा कोई शत्रु।
दैत्यने अवधिज्ञान से जान लिया कि रुक्मिणी का नवजात पुत्र उसका पूर्व जन्म का शत्रु है।
दैत्य रुक्मिणी सुत का हरण कर आकाश मार्ग से चल दिया
रे धूर्त। तू ही पूर्व जन्म का राजा मधु है। मेरा शत्रु। तुने मेरी पत्नी का हरण किया था मैं तुझे जीवित नहीं छोड़ूंगा।
वह शिशु को लेकर पर्वत पर ले गया। वहां उसने एक बहुत बड़ी चट्टान देखी
हां यह ठीक है। इसे इस नवजात शिशु की चट्टान के नीचे दबा दूं। वह - वहीं तड़प - तड़प कर मर जाएगा।
दैत्य शिशु को चट्टान के नीचे दबा कर चला गया। आगे में....

रानी ! अहो, अवश्य ही कोई दिव्य व्यक्तित्व है ! या कोई दैत्य रहता है ! अन्यथा हमारा विमान नहीं रुकता !

मेघपुर नगर के राजा कालसंवर अपनी रानी कनकमाला के साथ आकाशमार्ग से गुजरे। उस चट्टान पर आते ही उनका विमान अपने आप रुक गया।

हे देव ! संभव है यहां कोई धरम हारीरी संकट में हो ! हमें देखना चाहिए

राजा कालसंवर रानी कनकमाला के साथ पहाड़ पर्वत पर उतरे।

आश्चर्य ! यह चट्टान किस कारण रुकी है ? अवश्य ही इसके नीचे कोई जीव दबा है !

ठहरिए ! मैं अभी विद्याबल से इस चट्टान को हटाती हूँ।

चट्टान के हटते ही वहां नवजात शिशु दिखाई दिया। राजा कालसंवर ने तुरन्त उसे अपनी गोद में उठा लिया।

इतना सुन्दर शिशु यहां कहां से आया ? फिर चट्टान के नीचे दबकर नीरोग नहीं। सिवाय ही यह बालक अति विलक्षण है। हे देवी, तुम्हारे कोई पुत्र नहीं है ! यह पुत्र तुम स्वीकारो !

हे स्वामी ! आपकी रानियों से आपके पांच सौ पुत्र हैं। यदि आप इसे युवराज का पद देने का वचन दें तो मैं इसे स्वीकार कर लूँ

राजा कालसंवर ने कनकमाला की इच्छा मान ली। बालक को लेकर दोनों मेघकूट नगर आ गए।

अपनी नगरी में पहुंचने पर राजा कालसंवर ने सभा बुलाई

बधाई हो महाराज

मंत्रियों और सभासदों ! रानी कनकमाला के गूढ़ गर्भ था। उसने वन में एक अति सुन्दर पुत्र को जन्म दिया है। नवजात शिशु के जन्मोत्सव की तैयारियां जोर-शोर से की जाए।

जैसी आपकी आज्ञा

नवजात शिशु का जन्मोत्सव धूम धाम से मनाया गया। बालक का नाम प्रद्युम्नकुमार रखा गया।


नारद जी द्वारिका में.....
हाँ, मैंने नवजात शिशु के हरण का समाचार सुना था मैं तभी पुण्डरीकिनी नगरी के तीर्थंकर सीमंधर स्वामी के समवशरण में गया था। भगवान की स्तुति करने के बाद मैंने तुम्हारे पुत्र के बारे में पूछा
कब आना था तीर्थंकर सीमंधर स्वामी ने ?
तुम्हारे पुत्र का हरण पिछली शत्रुता के कारण एक दैत्य ने किया है वह उसे मारना चाहता था किंतु ऐसा न हो सका और अब वह आकाश मेघकूट नगर के राजा कालसंवर और रानी कनकमाला के पास है।
तो चलिए, उसे ले आएं।
नहीं नारद ! वह अभी नहीं आयेगा, भगवान सीमंधर स्वामी के अनुसार वह सोलह वर्ष बाद सोलह विद्याओं सहित लौटेगा। उसके आगमन के लक्षण भी उन्होंने बताए - तुझे भोजन लगेगा, बहरे सुनने लगेंगे, सूखे वृक्ष हरे हो जाएंगे, आदि आदि।
आपने यह समाचार देकर बड़ा उपकार किया। सुनिए।
मैं मेघकूट जाकर तुम्हारे पुत्र के हरण की आया हूँ। राजा-रानी ने उसका जन्मोत्सव बड़ी धूम धाम से मनाया था। प्रद्युम्न कुमार नाम रखा है उन्होंने उसका।
अच्छा!
नारद जी प्रद्युम्न के अद्भुत आदि का विस्तार से वर्णन कर देवलोक गमन कर गए। द्वारिका में व्याप्त शोक की लहर समाप्त हुई।
समय बीतता गया। प्रद्युम्न कुमार ने सोलहवें वर्ष में प्रवेश किया। एक दिन राजा कालसंवर ने सभा बुलाई। उस समय सभासदों के अलावा सभी राजकुमार भी मौजूद थे।
सभासदों ! प्रद्युम्न कुमार राजकुमारों में सबसे छोटा है किंतु यह सबसे अधिक बलवान और योग्य है। फिर मैंने रानी कनकमाला को वचन भी दे रखा है। इसलिए मैं प्रद्युम्न कुमार को युवराज घोषित करता हूँ। प्रद्युम्न, आगे आओ और युवराज का पद ग्रहण करो।
आपकी आज्ञा शिरोधार्य, पिताजी।
राजकुमारों को राजा का यह निर्णय बुरा लगा।


राजा के अन्य पुत्रों ने आपस में मंत्रणा की।
यह पिताजी का अपमान है। यज्ञ इंद्रजीत हम में सबसे बड़े हैं। कुलराजा का पद उन्हें ही मिलना चाहिए था।
हमें इस निर्णय का विरोध करना चाहिए
नहीं बीज है। किसी बहाने प्रद्युम्न को बाहर ले चलो वहीं उसका काम तमाम कर देंगे
विरोध करने से कुछ न होगा। क्यों न रास्ते का कांटा ही हटा दिया जाए प्रद्युम्न का बुरा
राजकुमारों को उनकी माताओं की भी शह थी
राजकुमार एकत्र होकर राजा कालसंवर के पास पहुंचे
पिताजी, युवराज प्रद्युम्न कुमार सहित हम सभी भाई विजयार्द्ध पर्वत के शिखर विजयार्द्ध पर्वत पर आज घूमने जाना चाहते हैं। कृपया हमें आज्ञा दें।
उत्तम विचार है। अवश्य जाओ। मेरी शुभकामनाएं और आशीष।
प्रद्युम्नकुमार सहित सभी राजकुमार विजयार्द्ध पर्वत को चल दिए। विजयार्द्ध पर्वत में एक गुफा थी, जिसमें भुजंगदेव नामक एक दैत्य रहता था, राजकुमारों ने छल से प्रद्युम्न को गुफा में भेजा।
भाइयो, गुफा में प्रवेश करने वाले को अदृश्य लक्ष्मी सिद्धेतो - ऐसा पूर्वजों का कथन है। हम सबसे बड़ोन गुफा में प्रवेश न लेना
यज्ञबंधु हम सब में बड़े हैं। वह जिसे आज्ञा देंगे, वही जाएगा।
पिताजी के अनुसार हममें सबसे अधिक पढ़ा लिखा और योग्य प्रद्युम्न है। मेरे विचार से उसे ही गुफा में प्रवेश करना चाहिए।
मुझे आपका आदेश सहर्ष स्वीकार है। गुफा में मैं ही जाऊंगा।
यज्ञबंधु के कहने पर प्रद्युम्न कुमार ने गुफा में प्रवेश किया।
प्रद्युम्न कुमार को दैत्य भुजंगदेव ने ललकारा
कौन हो तुम? बिना अनुमति के गुफा में प्रवेश क्यों किया?
मेघकूट नगर का युवराज प्रद्युम्न कुमार। यहां राजन लक्ष्मी प्राप्त करने आया हूं। मुझे रोकने वाले तुम कौन हो?
मैं भुजंगदेव हूं। इस गुफा का रक्षक। यहां किसने प्रवेश किया वीरता नहीं दिखाते। बालक हो इसलिए समझाता हूं। लौट जाओ। क्यों गलत काम करते हो।
बकवास बंद करो। अगर हो तो युद्ध करो।
प्रद्युम्न कुमार और भुजंगदेव में युद्ध होने लगा।

दोनों में काफी समय तक युद्ध हुआ, अंत में भुजंगदेव पराजित हुआ।

मैं हार मानता हूँ। आज से मैं आपका सेवक और आपमेरे स्वामी। मेरे योग्य जिज्ञासा, विद्याएं अब आपकी हैं। यह रत्नजटित मुकुट धारण कीजिए और मुझे आज्ञा दीजिए, क्या करूं।

उठो, तुम्हें मैं जीवनदान देता हूं। अब जब कभी मैं तुम्हें याद करूं, हाजिर होना। जो काम बताऊं, तुम्हें पूरा करना। समझे?

युद्ध के बाहर राजकुमार कुछ और ही सोच कर मग्न हो रहे थे।

इतनी देर हो गई। लगता है दैत्य ने प्रद्युम्न को मार डाला। चलो क्वेट चलें।

आह चर्य! वह जीवित वापस आ रहा है।

प्रद्युम्न को कलानुशीलन से सज्जित देख सभी राजकुमारों ने ऊपरी मन से प्रशंसा की।

मैं तो पहले ही जानता था तुम अवश्य सफलता प्राप्त करोगे। बधाई! चलो अब किसी और जगह चलें।

कैसी अप्सरा हो तुम?

लक्ष्यवेध प्रद्युम्न कुमार को मारने के इरादे से दौड़ाए उनके साथी पराजय हुआ। प्रद्युम्न सभी जगह विजयी हुआ और उसे 14 विद्याएं प्राप्त हुई

तदनन्तर राजकुमार विपुल पर्वत के समीप पहुंचे

जो भी इस पर्वत शिखर पर चढ़ने में सफल होगा, उसे मन चाहा मिलेगा।

बंधु, इस पर्वत शिखर पर मैं चढ़ना चाहता हूं। आप अनुमति दें।

प्रद्युम्न कुमार पर्वत शिखर पर चढ़ने लगा।

पर्वत शिखर पर पहुंचने पर प्रद्युम्न कुमार को एक अपूर्व सुन्दरी वहां बैठी दिखाई दी। वह असमंजस में पड़ गया। तभी वहां नारद नामक देव का आगमन हुआ।

हे महाभाग! यह अपूर्व सुन्दरी कौन है और इस निर्जन पर्वत पर क्यों बैठी है?

यह प्रभंजन नामक विद्याधर की सुपुत्री है। शुरुवाणी है कि इसका विवाह राजकुमार प्रद्युम्न से होगा। गुरुमुख से यह भी सुना है कि प्रद्युम्न कुमार कभी भी इस शिखर पर आ सकते हैं। यह उन्हीं की प्रतीक्षा में यहां बैठी है।

प्रद्युम्न कुमार ने अपना परिचय दिया और नारदजी की साक्षी पूर्वक उस सुन्दरी से विवाह किया

हमने प्रद्युम्न को मारने के लिए कितनी अधिक कोशिश की वह उतना ही अधिक शक्तिवान, विद्यावान होता गया। यदि वह इस शिखर से भी सकुशल विजयी हो कर लौट आया तो हम यहीं से वापस लौट चलेंगे।

ठीक है। यही करना चाहिए।

प्रद्युम्न कुमार शिखर से सकुशल नीचे उतर आया

नेमकूट नगर पहुँचने पर महाराज प्रद्युम्न तथा अन्य राजकुमारों के साथ राजसभा में उपस्थित हुआ।

पिता जी! प्रणाम। हमारी नाई आनंद और भाई हैं। प्रद्युम्न अत्यधिक अद्भुत वीर है। इसने सोलह खानों से सोलह लाभ प्राप्त किए

इसके सुन समाचार सेनापति का हर्ष हुआ। प्रद्युम्न! तुमने मुझे यही आज्ञा दी। जाओ और शिघ्र ही यह समाचार अपनी सास को दो

जो आज्ञा, पिता जी।

प्रद्युम्न कुमार रानी कनकमाला के महल में गया।

माता जी, प्रणाम! आपके आशीर्वाद से मैंने सोलह लाभ प्राप्त किए हैं।

चलो रहो तुमने सोलह लाभ प्राप्त किए - यह सुनकर मेरा रोम रोम प्रसन्न हो उठा। मेरी इच्छा है कि अब तुम सत्रहवां लाभ भी प्राप्त करो।

प्रद्युम्न! सुनो, मैं तुम्हारी माँ नहीं हूँ। तुम्हारे बचपन में ही मैं तुम्हारे रूप पर मुग्ध हो गई थी। उसी समय मैंने एक कामना की थी अब तुम तरुण हो जाओगे, तुम्हें अपना पति बनाऊँगी। अतः अब मेरे लाभ के रूप में मुझे प्राप्त करो।

धिक्कार है तुम्हारी कामना को! ईर्ष्यापूर्ण विचार! हे माँ! चित्त को स्थिर करो। इस अशोभनीय विचार को तुरंत त्याग दो।

हे स्वामी! अब मेरा जीना बेकार है, जिसे हमने पुत्र की तरह पाला - पोसा, उसी प्रद्युम्न ने मेरी इज्जत लूटने का प्रयास किया! आपके रहते हुए क्या.....

राजा कालसंवर ने रानी की शिकायत पर विश्वास कर लिया

प्रद्युम्न रानी कनकमाला को लाभ बताकर चली गया अपने महल में चला गया। और अपने प्रयास में असफल होनेपर रानी कनकमाला ने अपना रूप बिगाड़ लिया। राजा कालसंवर के आने पर उसने प्रद्युम्न की बुरी शिकायत की।

बस, बस आगे कुछ न कहो! उस नीच को अपने किए का फल भोगना पड़ेगा।


तभी कनकमाला बहुत उदास हो उठी
अब तो मुझे तभी शांति मिलेगी, जब मैं उसका रक्तरंजित कटा शीश देख लूंगी।
ऐसा ही होगा
राजा कालसंवर ने अपने सबसे बड़े पुत्र वज्रतुंड को बुलाया।
तुम तब भाई दुष्ट प्रद्युम्न को कहीं एकांत में ले जाकर मार डालो। उसने बड़ा नीच काम किया है। मैं उसकी सूरत भी नहीं देखना चाहता।
हम आपके आदेश का पालन करेंगे। आप शीघ्रातिशीघ्र रहें
वज्रतुंड और उसके अन्य भाई प्रद्युम्न को लेकर क्रीड़ा के लिए एक बावड़ी पर ले गये।
राजा कालसंवर ने रानी को प्रद्युम्न को मरवाने का वचन दिया।
प्रद्युम्न कुमार को विद्याबल से वज्रतुंड और अन्य राजकुमारों के मन में किये पाप का पता चल गया। उसने तुरंत अपना मायावी रूप बनाया। मायावी प्रद्युम्न कुमार पेड़ पर चढ़ गया और अपने मायावी रूप को बावड़ी में कुदाया
अरे प्रद्युम्न! यहां क्या रखा है? कूदो न! बड़ा मजा है।
अभी आया।
जैसे ही मायावी प्रद्युम्न कुमार बावड़ी में कूदा, राजकुमारों ने उसे डुबाने की कोशिश की
इसे दबोचलो।
हम इसे यहीं डुबाकर मार डालेंगे।
अरे यह क्या हुआ! इन बावड़ी वालों ने धोखे से कैसे मार दिया
जब तट पर केवल एक ही राजकुमार रह गया तब असली प्रद्युम्नकुमार ने बावड़ी को एक विद्याबल शिला से ढक दिया
हैं! हा, हा, हा। तुम पिताजी के कहने पर मुझे मारने आए थे न! आओ, और तीनकुल मेरे भाइयों, आकर पिता की मदद दो!
शिला से ढके एक भाई को छोड़कर सारे राजकुमार बावड़ी में कैद हो गए।
यह राजकुमार राजा कालसंवर की सभा में पहुंचा
पिताजी अनर्थ हो गया। प्रद्युम्नकुमार ने सभी भाईयों को बावड़ी में कैद कर दिया है। मुझे तो केवल इसलिए छोड़ दिया कि आपको खबर कर सकूं। कुमारीशिला सभी भाईयों की जान खतरे में है
अच्छा! इसकी यह मजाल? मैं देखता हूं।
महाराज, वह अकेले आपके वश में नहीं आयेगा सेना लेकर जाइए।
राजा कालसंवर सेना लेकर बावड़ी की ओर चल दिया।


प्रद्युम्न कुमार ने विद्या के प्रभाव से एक विशाल सेना बनानी, भीषण युद्ध हुआ। कालसंवर के बहुत सैनिक मारे गए। आखिर प्रद्युम्नकुमार ने कालसंवर को नागपाश में बांध लिया।
अरे कोई है। मुझे इस नागपाश के बंधन से मुक्त कराओ।
पिताजी, आपके सैनिक तो भागे जा रहे हैं
तभी आकाश मार्ग से नारदजी वहां आ पहुंचे।
अरे! कालसंवर! तुम्हारी यह दशा किसने की?
नारायण प्रद्युम्नने। जिसे मैंने पाला। अजराज का पद दिया। उसी बेटेने महाराज!
तुमने ऐसा क्यों किया, प्रद्युम्न?
मुनिवर, दुश्चारिणी मां के सिखाए अनुसार यह विश्वास करे इन्होंने मुझे मार डालने की कोशिश की। मैंने उसका प्रतिरोध किया है, बस!
प्रद्युम्न कुमार ने कनकमाला का कुचरित्र नारद को बताया।

वत्स! इस भिल्ल सर्प को बंद करो! रानी कनकमाला के पूर्व जन्म के कारण यह सब हुआ! इसे मूल आओ और राजा कालसंवर को मुक्त करो

जैसी आपकी आज्ञा!

प्रद्युम्न कुमार की जय

प्रद्युम्न कुमार ने राजा कालसंवर को नागपाश से और उनके पांच सौ राजकुमारों को बन्दी से मुक्त किया। मुख सैनिकों को तीव्रित द्वार देकर अपनी सेना को मुक्त कर दिया।

राजन! आपके प्रद्युम्न का कालसंवर-महल में स्वागत है। इसके आपके यहां रहने की अवधि पूरी हुई। अब इसे अपने पिता कृष्ण और माता रुक्मिणी के पास जाने की अनुमति दीजिए।

तो क्या वहीं से विदा लेंगे। मगर तब नहीं दीखेंगे।

हां तात! सचित, महलों तक चलिए। मुझे माता कनकमाला से भी आज्ञा लेनी है।

प्रद्युम्न कुमार रानी कनकमाला से आज्ञा लेने पहुंचा

बेटा, क्षमा तो मैं चाहती हूं। अपने किए पूर्व पाप के कारण मेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गई। मैं अपने को कभी क्षमा नहीं कर सकूंगी। तुम हंसी-खुशी जाओ! तुम्हारा सदा कल्याण हो।

हे मातः! मैं अपने जनक-जननी के पास जा रहा हूं। अज्ञानवश मुझसे आपका जो अपराध हुआ, उसके लिए क्षमा करें, मुझे द्वारिका जाने की अनुमति दें।

राजा कालसंवर, रानी कनकमाला और नगरवासियों से प्रद्युम्न और नारदजी ने अनुमति लेकर विदा किया।

प्रद्युम्न कुमार ने विद्याबल से एक सुंदर विमान बनाया। नारदजी और प्रद्युम्न ने आकाश मार्ग से द्वारिकापुरी के लिए प्रस्थान किया। उन्होंने बीच ही काफी दूरी तय कर ली।

इस समय हम विद्याबल के वेग से उड़ रहे हैं। द्वारिका अभी दूर है।

हे तात! द्वारिका अभी कितनी दूर है?

कुछ दूरी और निकलने के बाद एक स्थान पर सैनिकों की एक टुकड़ी लगी हुई दिखाई दी।

हे सूतवर! तनिक नीचे तो देखिए। कोई सैन्य दल आ रहा है।

हां वत्स! दुर्योधन की पुत्री राजकुमारी उदधि कुमारी सैनिकों के साथ द्वारिका आ रही है। पहले इसका विवाह तुम्हारे साथ होना था। किन्तु तुम्हारा हरण हो गया इसलिए अब इसका विवाह सत्यभामा के पुत्र भानु कुमार के साथ होगा।

नारद जी ने प्रद्युम्न को दुर्योधन और श्री कृष्ण के पूर्व निश्चय के बारे में विस्तार से बताया।

प्रद्युम्न कुमार के मन में उदधि कुमारी को देखने की लालसा जगी।

हे तात! आपकी आज्ञा हो तो मैं सेना देख आऊं।

जाओ। किन्तु कहीं कोई विघ्न न खड़ा हो।

विमान से आकाश में रोककर प्रद्युम्न कुमार नीचे अवनि पर उतर आया। और दल बल का वेष बनाया और सैनिकों का मार्ग रोक कर खड़ा हो गया।

हे भाई! तुम कौन हो और यों मार्ग रोक कर क्यों खड़े हो गए हो?

हम मौन राजा हैं। श्री कृष्ण की आज्ञा से द्वारिका आने वालों से कर वसूल करते हैं।

वर के रूप में हमें तुमसे क्या देना होगा?

सूरजें! यह कैसे हो सकता है।

तुम्हारे पास जो सुंदर कन्या है, उसे ही मैं वर के रूप में चाहता हूं।

कैसे हो सकता है!!! हा, हा, हा, ओ देखो, ऐसे में तुम्हारी राजकुमारी को हर कर आकाश मार्ग से जाता हूं। किसी में सामर्थ्य हो तो आए और इन्हें छुड़ाले।

बचाओ बचाओ

पकड़ो पकड़ो

अरे यह तो कोई मायावी है, आकाश में उड़ गया।

वैरन्थ है

शीलरूपी प्रद्युम्न कुमार उदधि कुमारी को लेकर आकाश में उड़ते अपने विमान में आ पहुंचा।

बेटी! विलाप मत कर! शोक त्याग। यह शील नहीं है। तेरा पति रुक्मिणी का पुत्र प्रद्युम्न है। हम लोग भी द्वारिका ही चल रहे हैं।

हे तात! मेरी रक्षा कीजिए! यह शील मुझे अकस्मात ले आया है। मेरे पिता ने मुझे महारानी रुक्मिणी के पुत्र वीरबेला विवाहाहा! इसीलिए मैं द्वारिका जा रही थी, कृपया इसके चंगुल से मुझे छुड़ाइए।

नारद जी ने उदधिकुमारी को धीरज बंधाया। शील का रूप त्याग प्रद्युम्न अपने प्रकाशित रूप में आ गया। उदधि-कुमारी प्रसन्न हो गई।

प्रद्युम्नकुमार का विमान द्वारिकापुरी के समीप पहुंचा

बेटा प्रद्युम्न! वे ऊंची-ऊंची अट्टालिकाएं, वो भव्य मन्दिर देख रहे हो वही है तुम्हारे पिता श्री कृष्ण की राजधानी - द्वारिकापुरी

बहुत सुंदर नगरी आन पहुंची है। आपकी आज्ञा हो तो मैं नगरी को देख आऊं

नारद जी ने प्रद्युम्न को संबोधित किया

यह यादवों की नगरी है बेटा! यहां तुमने कोई कौतुक किया तो ये बहुत उत्पात मचाएंगे।

नहीं, ऐसा कुछ नहीं होगा। मैं गया और आया

प्रद्युम्न कुमार ने एक युवक को इक घोड़े पर खड़े देखा, विद्याबल से वह जान गया कि युवक सत्यभामा सुत भानुकुमार था। प्रद्युम्न ने विद्या द्वारा एक सुंदर घोड़ा बनाया और वृद्ध का रूप धर भानुकुमार के पास पहुंचा।

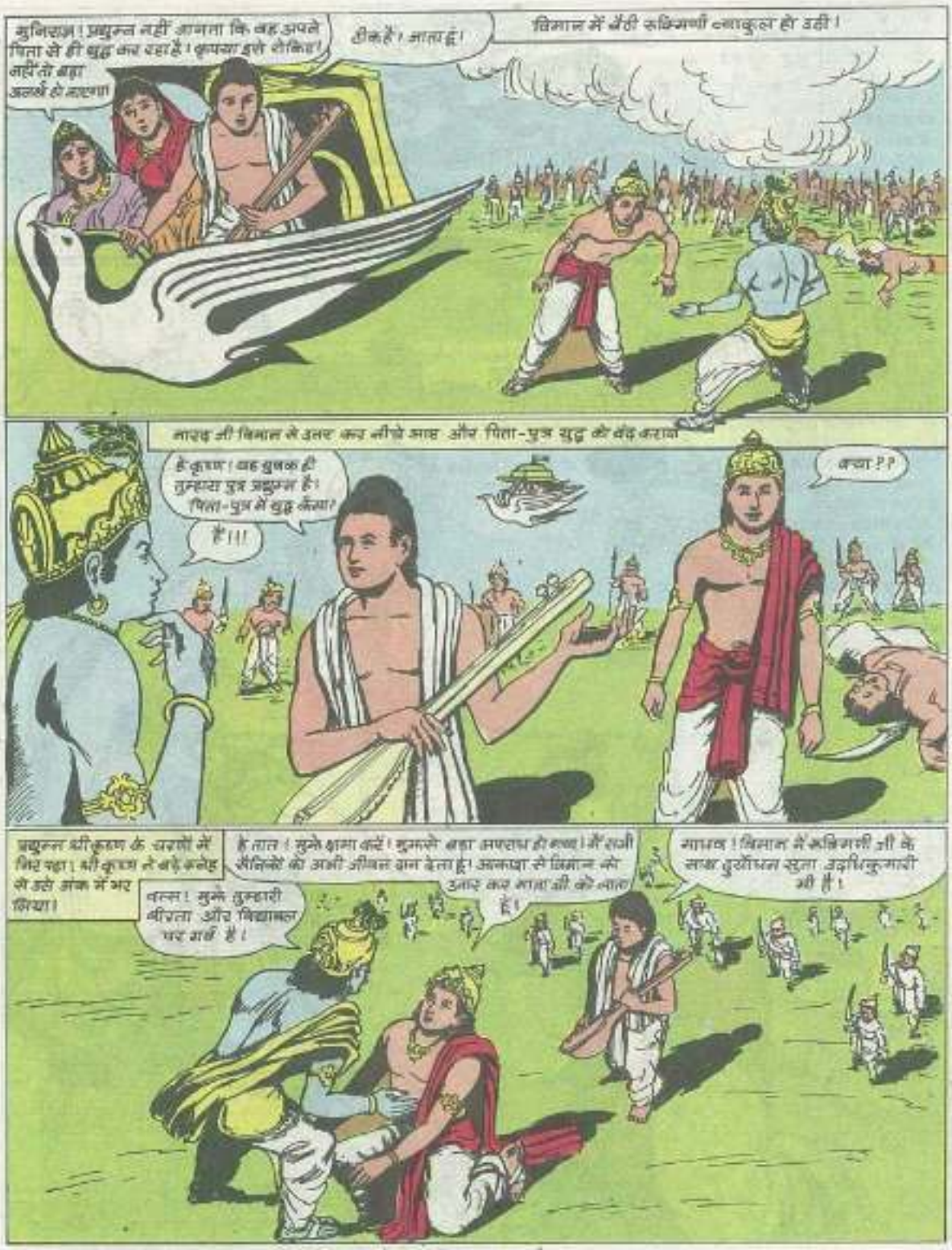


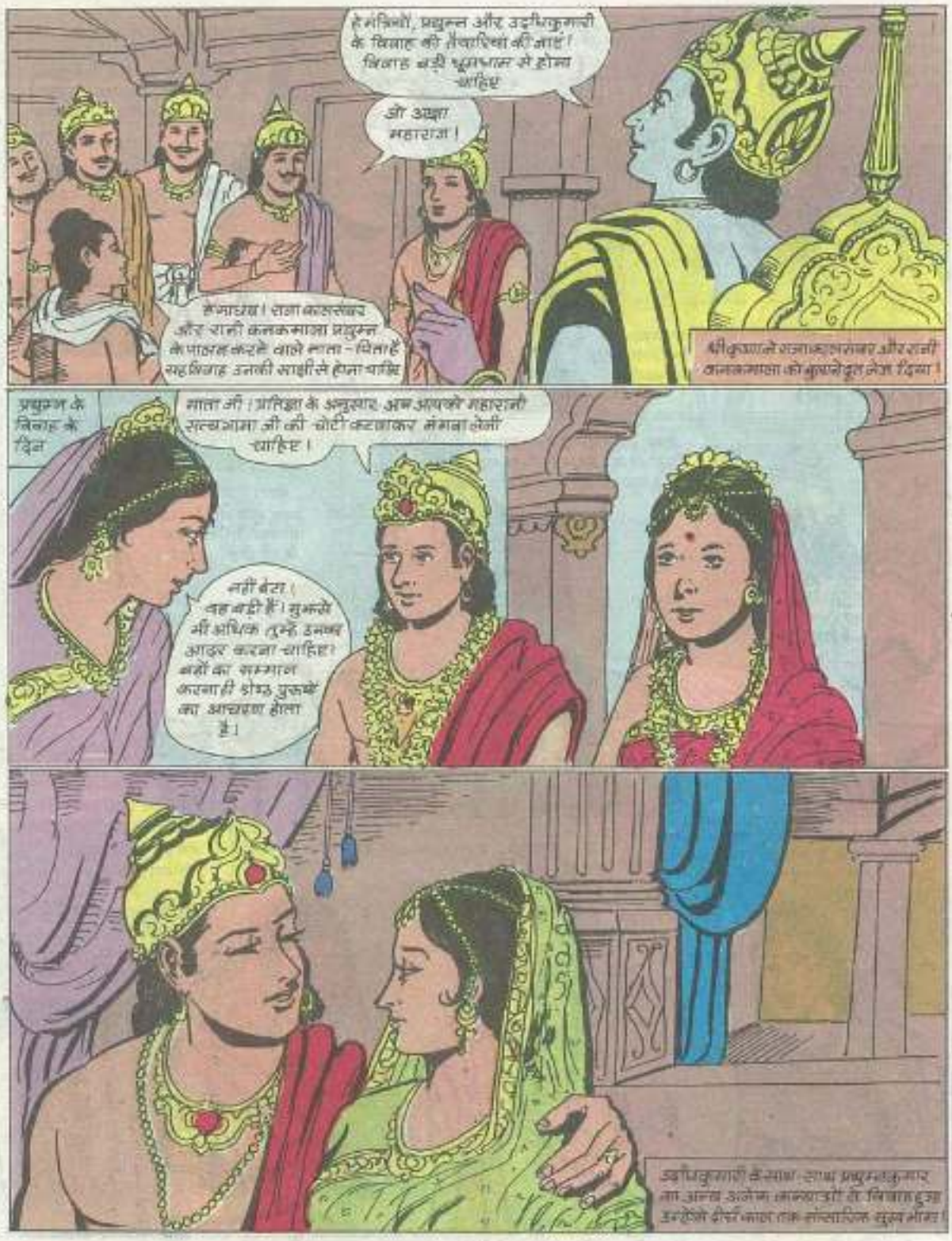




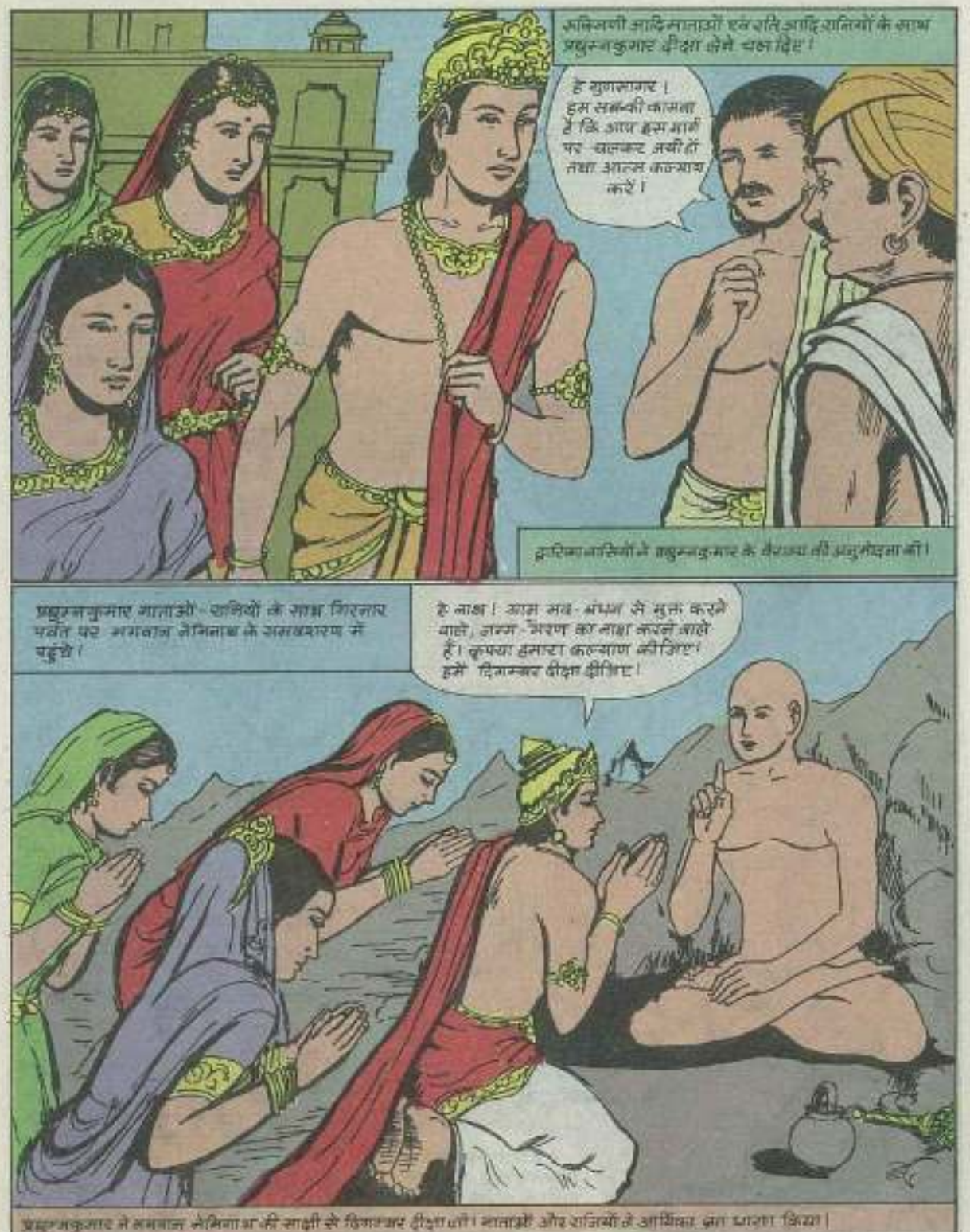

रुक्मिणी श्रीकृष्ण जी से धर्म चर्चा करने लगी
हे भूतभावन ! सम्यकत्व के कितने अंग होते हैं ?
देवी ! सम्यकत्व के आठ अंग होते हैं
हे श्रद्धेया नारद जी द्वारा बताए पुत्र आगमन के सभी लक्षण प्रकट हो गए हैं ! किंतु वह कहीं नहीं दिखाई देता ! यह क्या रहस्य है
हे माता ! ध्यान से देखो, मैं ही तुम्हारा पुत्र प्रद्युम्न हूँ !
श्रीकृष्ण जी सभी प्रद्युम्न ने आठ अंगों का विस्तार से विवेचन किया ! प्रद्युम्न के आगमन के नारद जी द्वारा बताए लक्षण प्रकट होने लगे ! घुंघराले बाल, मछली जैसे नेत्र, सुंदर वृक्ष हरे हो गए, कुरूप जवान हो गए आदि
श्रीकृष्ण का रूप त्याग प्रद्युम्न ने अपना असली रूप प्रकट किया ! रुक्मिणी ने प्रद्युम्न को अंक में भर लिया, वह हर्ष से गद्गद हो उठी !
उसी समय महारानी सत्यभामा की दासियां आती दिखाई दी ! उन्हें देख रुक्मिणी बहुत चिंतित हो उठी !
हे माता ! इन दासियों को आता देख आप व्यस्त और चिंतित क्यों हो गई
क्या बताऊं बेटा, देवर्षि नारद तुम्हारा ही हरण हो गया था ! आज सत्यभामा जी के पुत्र का रुक्मिणी के साथ विवाह होगा ! प्रतिज्ञा के अनुसार आज सत्यभामा जी मेरी चोटी पर अपना पैर रखेंगी ये दासियां इसलिये मेरी चोटी गूंथने आ रही हैं !
रुक्मिणी ने पूर्व में की गई प्रतिज्ञा प्रद्युम्न को बतलाई !
यह कभी नहीं होगा, माता सत्यभामा जी के पुत्र का विवाह भी रुक्मिणी के साथ नहीं होगा ! वह तो तुम्हारी बहू बनेगी ! विश्वास न हो तो चलकर स्वयं देख लो ! वह आकाश में नारद जी के साथ मेरे विमान में बैठी है !
क्या ? चलो तो जरा ! मैं भी तो देखूं रूप की दुलारी को ! अपनी प्यारी बहू को !
प्रद्युम्न कुमार रुक्मिणी को लेकर विमानों से आकाश में उड़ गया ! महल में चारों तरफ शोर मच गया !

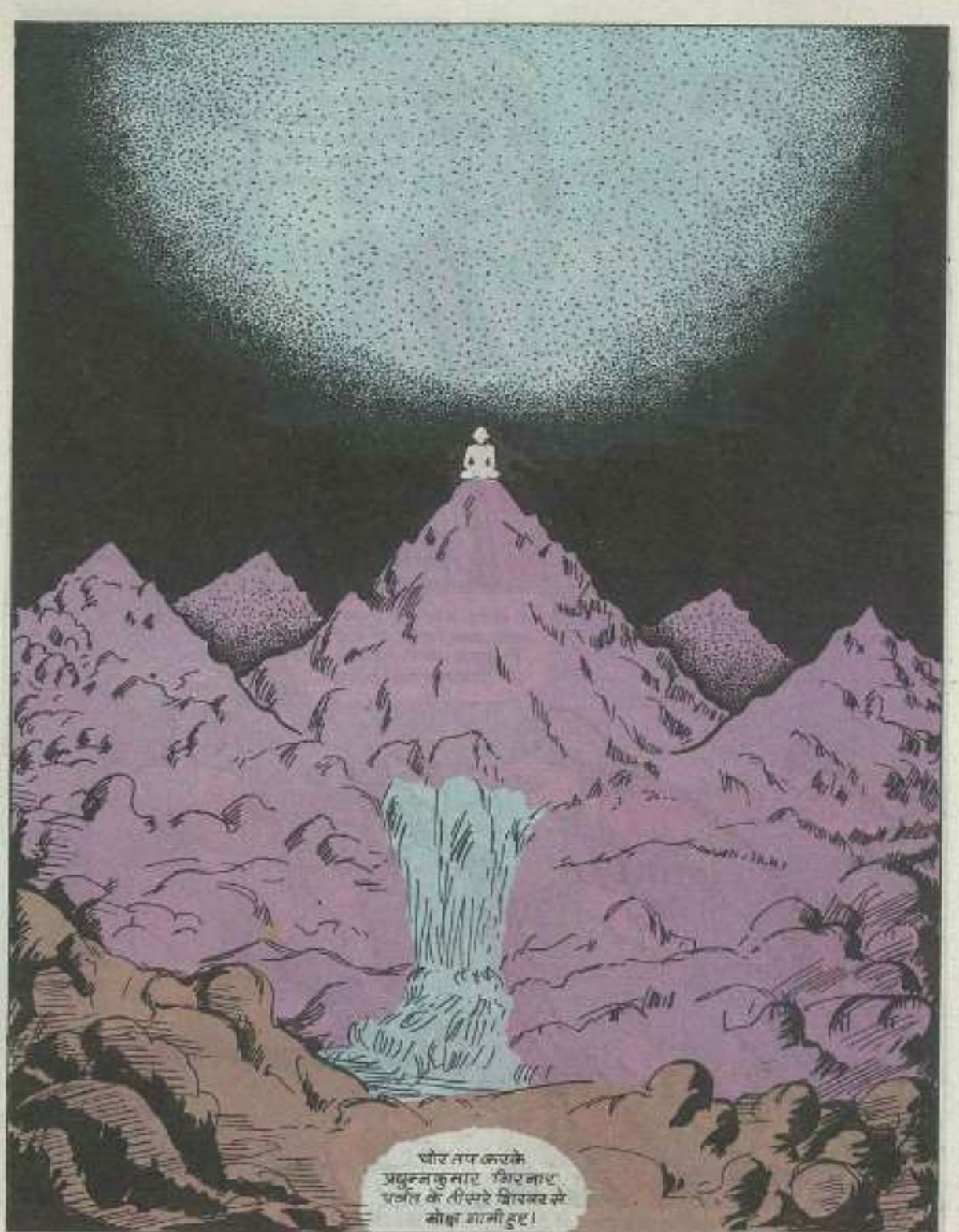

दास - दासियों का शोर सुनकर आकाशमार्ग से आती हुई रुक्मिणी युद्ध की आशंका से विचलित हो उठी।
यह क्या हुआ प्रद्युम्न! अब तो यादव अवश्य ही तुमसे युद्ध करेंगे।
कोई चिन्ता नहीं। मेरे पुत्रों को आज अपने बालक के बल - पराक्रम का परिचय मिल जाएगा।
पकड़ो पकड़ो
देखो कोई माधवी लक्ष्मणी माता का हरण करके लेजा रहा है।
अरे अन्दर से द्वारिकाधीश को सूचना दो।
सूचना मिलते ही श्रीकृष्ण ने रणभेरी बजवा दी। आनन - फानन में यादव सेना एकत्र हो गई और आदेश की प्रतीक्षा करने लगी। रुक्मिणी को विमान में बैठाकर प्रद्युम्न तुरंत वापस आ गया। सुमन्दर और विद्याओं की सहायता से उसने एक विशाल सेना बनाई। दोनों सेनाओं में डटकर युद्ध हुआ।
हे वीर और विलक्षण बालक! मैं तुझे सशस्त्र युद्ध के लिए ललकारता हूँ
हे शुभट शिरोमणि! मुझे आपकी चुनौती स्वीकार है।
युद्ध में यादव सैनिक अधिक संख्या में मारे गए। यह देख श्रीकृष्ण ने प्रद्युम्न को सशस्त्र युद्ध की चुनौती दी।


मुनिराज ! प्रद्युम्न नहीं जानता कि वह अपने पिता से ही युद्ध कर रहा है। कृपया इसे रोकिए! नहीं तो बड़ा अनर्थ हो जाएगा!
ठीक है। आता हूं!
विमान में बैठी रुक्मिणी व्याकुल हो उठी।
नारद जी विमान से उतर कर नीचे आए और पिता-पुत्र युद्ध को बंद कराया
हे कृष्ण! यह युवक ही तुम्हारा पुत्र प्रद्युम्न है। पिता-पुत्र में युद्ध कैसा?
हैं!!!
क्या??
प्रद्युम्न श्री कृष्ण के चरणों में गिर पड़ा। श्री कृष्ण ने बड़े स्नेह से उसे अंक में भर लिया।
हे तात! मुझे क्षमा करें! मुझसे बड़ा अपराध हो गया। मैं सभी सैनिकों को अभी जीवित दान देता हूं। आकाश से विमान को उतार कर माता जी को लाएं।
वत्स! मुझे तुम्हारी वीरता और विद्वत्ता पर गर्व है।
नारद! विमान में रुक्मिणी जी के साथ दुर्योधन सुता उदधिकुमारी जी हैं।


हे मंत्रियो, प्रद्युम्न और उदधिकुमारी के विवाह की तैयारियां की जाएं। विवाह बड़ी धूमधाम से होना चाहिए
जो आज्ञा महाराज।
हे माधव! राजा कनकसेन और रानी कनकमाला प्रद्युम्न के पालक-पिता हैं। यह विवाह उनकी सहमति से होना चाहिए
श्रीकृष्ण ने राजा कनकसेन और रानी कनकमाला को बुलावा भेज दिया।
प्रद्युम्न के विवाह के दिन
माता जी! प्रतिज्ञा के अनुसार अब आपको महारानी सत्यभामा जी की चोटी कटवाकर मंगवा लेनी चाहिए।
नहीं बेटा, वह बड़ी हैं। तुमसे भी अधिक तुम्हें उनका आदर करना चाहिए। बड़ों का सम्मान करना ही श्रेष्ठ पुरुषों का आचरण होता है।
उदधिकुमारी के साथ-साथ प्रद्युम्नकुमार का अन्य अनेक कन्याओं से विवाह हुआ। उन्होंने दीर्घ काल तक सांसारिक सुख भोगे।


अतिशय प्रद्युम्नकुमार को वैराग्य हो गया वह अपने पिता के पास दिगम्बर दीक्षा लेने की अनुमति प्राप्त करने गए।
हे पिताश्री। आपकी कृपा से मैंने समस्त सांसारिक सुखों को भोगा है। किंतु संसार अनित्य है इसलिए मैं दिगम्बर दीक्षा लेना चाहता हूं, कृपया अनुमति और आशीष दें।
हे वत्स। वैसे तो आपी तुम्हारी उम्र वैराग्य योग्य नहीं है। जीवन में पुत्र को पिता से भी आगे निकलना चाहिए इसी सोच में तुम्हें अनुमति देता हूं। मेरा आशीष सदैव तुम्हारे साथ है
श्रीकृष्ण की अनुमति ले प्रद्युम्नकुमार माता रुक्मिणी के पास गए।
हे मां, मैं दीक्षा लेने जा रहा हूं। पिता जी की अनुमति मिल गई है। कृपया आप भी अनुमति दें।
बेटा! तेरी विरहिणि देख मुझे भी वैराग्य हो रहा है। तेरे साथ मैं भी दीक्षा लूंगी।
प्रद्युम्न कुमार के वैराग्य की खबर सुनकर रति उदधिकुमारी आदि रानियां सांसारिक भोगों से विरक्त हो गई
हे स्वामी! आप ही हमारे सर्वस्व हैं आप हमें भी आर्यिका.....
हम भी आर्यिका व्रत ग्रहण करेंगी


रुक्मिणी आदि माताओं एवं रति आदि रानियों के साथ प्रद्युम्नकुमार दीक्षा लेने चल दिए।
हे गुणसागर! हम सबकी कामना है कि आप इस मार्ग पर चलकर अभी ही तथा आत्म कल्याण करें।
द्वारिका वासियों ने प्रद्युम्नकुमार के वैराग्य की अनुमोदना की।
प्रद्युम्नकुमार माताओं - रानियों के साथ गिरनार पर्वत पर भगवान नेमिनाथ के समवशरण में पहुंचे।
हे नाथ! आप सब-संघ से मुक्त करने वाले, जन्म-मरण का नाश करने वाले हैं। कृपया हमारा कल्याण कीजिए। हमें दिगम्बर दीक्षा दीजिए।
प्रद्युम्नकुमार ने भगवान नेमिनाथ की साक्षी से दिगम्बर दीक्षा ली। माताओं और रानियों ने आर्यिका व्रत धारण किया।


घोर तप करके
प्रद्युम्नकुमार गिरनार
पर्वत के तीसरे शिखर से
मोक्ष गामी हुए।

प्रकाशक : आचार्य धर्म श्रुत ग्रन्थ माला, गोधा सदन,
अलसीसर हाउस, संसार चंद रोड़, जयपुर
सम्पादक : धर्मचंद शास्त्री
लेखक : मुनि अमित सागर जी
चित्रकार : बनेसिंह जयपुर

प्रकाशन वर्ष : १९८७ अंक ८ मूल्य : १०.००

जैनाचार्यों द्वारा लिखित सत्य कथाओं पर आधारित

जैन चित्र कथा

आठ वर्ष से ८० वर्ष तक के बालकों के लिए

ज्ञान वर्धक, धर्म, संस्कृति एवं इतिहास की जानकारी देने वाली स्वस्थ, सुन्दर, सुरुचिवर्धक, मनोरंजन से परिपूर्ण आगम कथाओं पर आधारित जैन साहित्य प्रकाशन में एक नये युग का प्रारम्भ करने बाली एक मात्र पत्रिका

जैन चित्र कथा

ज्ञान का विकाश करने वाली ज्ञानवर्धक, शिक्षाप्रद और चरित्र निर्माणकारी सरल एवं लोकप्रिय सचित्र कथा जो बालक वृद्ध आदि सभी के लिए उपयोगी अनमोल रत्नों का खजाना, जैन चित्र कथा को आप स्वयं पढे तथा दूसरों को भी पढ़ावे।

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें।

आचार्य धर्मश्रुत ग्रन्थ माला

संचालक एवं सम्पादक—धर्मचंद शास्त्री

श्री दिगम्बर जैन मंदिर, गुलाब वाटिका लोनी रोड, जि० गाजियाबाद

फोन 05762-66074